"हिज मास्टर्स व्हॉईस"

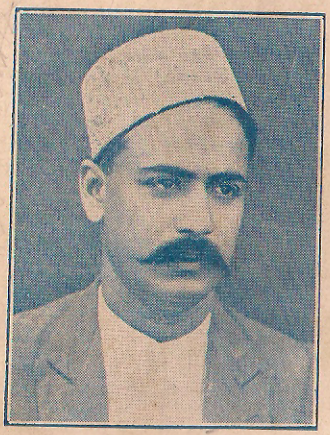

कालु कव्वाल

हिंदुस्तानी आणि मराठी रेकॉर्डे

"HIS MASTER'S VOICE"

HINDUSTANI & MARATHI

ऑगस्ट १९३३

SUPPLEMENT AUGUST 1933

निवडक रेकॉर्डस्.

N 5304 { जुग जुग जीवो मोहन
५३०४ { मधुर गातो रेंटीयो

चिमणलालनें हीं दोन्हीं गाणीं किती अप्रतिम तऱ्हेनं गाईलीं आहेत त्याची खात्री करून घ्या.

एक बाजू:—जुग जुग जीवो मोहन जुग जुग जीवो मोहन
जुग जुग जीवो मोहन

माता हिंदनां संतानो तेत्रीस क्रोड स्वजनो
तदर्थे बंदीवान मोहन जुग जुग जीवो मोहन
सत्य अहिंसा तेजे योगी तपस्वी शोभे
बेठो वीरासन मोहन जुग जुग जीवो मोहन
सार्व भौम सत्ता सामे अणनम निश्चिंत झुझे
भारत स्वाधीन मोहन जुग जुग जीवो मोहन
देशने जगाव्यो दांडी पीटी जइ कीनारे दांडी
तनमन कुरबान मोहन जुग जुग जीवो मोहन

जगत वेद्य तुंही आजे जीवन मुक्त कीर्ती गाजे
कोटी वंदन मोहन जुग जुग जीवो मोहन

दुसरी बाजूः—प्राचीन हमारा देशमां उद्योग घरनो रेंटीयो
घर घर फरी फरतो करो अळगो मुकेलो रेंटीयो
तम हाथ अडतां सुतर आपे जेटलुं अे रेंटीयो
स्वराज्य लावे तम समीपे तेटलुं अे रेंटीयो
धन्य अे महा पुरुष जेणे बताव्यो रेंटीयो
जुओ हिंदनुं दारिद्र हणवा ठीक फाव्यो रेंटीयो
तमे बक्षजो नीजपुत्री कन्यादान मीही रेंटीयो
तमे आपजो ल्हाणी तरीके न्यातमा अे रेंटीयो
घर झुंपडीने महेलमां पधरावजो अे रेंटीयो
नीशाळना इनाममां पण व्हेंचजो रेंटीयो
नहि अन्न के नहिं पाणी मागे नहि निंद लेतो रेंटीयो
थोके नहिं ने काम आपे मधुर गातो रेंटीयो
राखे करो डोने बचाती स्वराज्य चावी रेंटीयो
चांपी हृदयनी साथ साथे राखजो सौ रेंटीयो

Tarajan of Gadag — ताराजान गदग

N 5619 | गांधी गुरु जगताचा हा — बागेश्री; त्रिवट
५६१९ | अपने भारत माताकी दासी बनी — भैरवी-धुमाळी

" गांधी गुरु जगताचा " असें कोण म्हणणार नाहीं. महात्माजींचें नांव जगांमध्यें सारखें दुमदुमत आहे. यांचें कारण म्हणजे त्यांनीं हिंदु जनतेसाठीं

केलेला आत्मयज्ञ हें होय. असें असून आपण हा रेकॉर्ड संग्रहीं ठेवणार नाहीं काय ?

एक बाजू— गांधी गुरू जगताचा हा ।
चरख्याचा साचा, उपदेश निरंतरचा ॥ ध्रु० ॥
प्रिय राष्ट्रास जाहला, हृदयामधीं वसला ।
भूपति धुरिणांचा हा राष्ट्रसखा झाला ॥ १ ॥

दुसरी बाजू—अपने भारत माताकी, मैं तो दासी बनी ।
अपने महात्मा गांधीकी, मैं तो दासी बनी ।
बस्ती देखी, जंगल देखी । देखी मस्जीद मंदीर
सारे जगामें धुंड फिरी हुं । बैठा दिलके अंदर ॥ १ ॥
अपने नेहरूकी दासी बनी, मै तो दासी बनी
अपने महात्मा गांधी की, मै तो दासी बनी
हर वस्तुमें लीला तेरी, सखये तेरी माया ।
जिस्ने तुजको मनसे धुंडा, उस्नो हर्ज पाया ॥२॥
इधर तूं ह उधर तूं है, यहा तूं है वहा तूं है
ए सब गुले बैठे तेरेमगर, बार बार तू है
ध्यान ग्यान का गंध लगावो, मनमें हुवा उजाला
पेहने कु खादी पेहने कु पेरो श्रम नामका माला ॥
अपने भारत माताकी मै तो दासी बनी—

MUKUND & PARTY **मुकुंद आणि पार्टी**

N 5628	गांधीजीका नाम डुबाते	भा. १ ला	कोरस
५६२८	,, ,, ,,	भा. २ रा	,,

हा एक अर्थपूर्ण कॉमीकवजा रेकॉर्ड आहे. आपण एकवेळ ऐकाच.

एक बाजूः—गांधीजीका नाम डुबाते है फेशनवाले
बटलर युरोपके कहेलाते है फेशनवाले—गांधीजीक०.....
क्या कोट पॅन्ट शर्टपे कोलर लगा दिया
नेकटाइमें खुद अपने गलेको फसा लिया
मुंहमे सीगार कुत्ता बगलमें दबा दिया
तेलीके बेल बन गये चष्मा चढा लिया
बाल जमा कर हॅट लगा कर (२)
नकली युरोपियन बन जाते है फेशनवाले—गांधी०...

दुसरी बाजूः—गांधीजीका नाम डुबाते है फेशन वाले
बटलर युरोपके कहेलाते है फेशनवाले—गांधी०
फेशन यहां दिखानेमें घर कोन जाते है
खानेके लिये रोज वो होटलमें जाते है
बिस्कुट डबल रोटी वोह खुब खाते है
ब्रांडीकी वहां बोटल मजेसे उडाते है
कांटे छुरीसें टेबलपर खाकर
भ्रष्टोंमें नाम लिखाते है फेशनवाले—गांधी
फेशनसे सुझ रखते है पाउंमें डालकर
और स्टीक नचाते है हरदम समाल कर
मुंछो के बाल ले गई फेशन निकाल कर
आनंदी मित्र हो गये फेशनमें महालकर

देशी भाईका कहेना ना माने
ठोकर बिदेशीओकी खाते है फेशनवाले–गांधी–०...

BASHU QUAWAL बाशु कव्वाल

N 6089 { यह तुने वाकइ अये दिलरुबा कमाल किया — गझल
६०८९ { तुम ऐसे खुदगरज से मुहब्बत जताये कौन — ,,

हा **बाशु कव्वाल**चा रेकॉर्ड असुन तो फार सुंदर रीतीनें गाईला आहे.

एक बाजूः—यह तुने वाकइ अये दिलरुबा कमाल किया,
नियाह डाल दी जीसपर उसे नेहाल किया।

हम अपना हाल भला किस तरह बयान करें,
गमे-हबिब ने लागर किया नेढाल किया।

तुम्हारे नकशे कदम से यह साफ जाहेर है,
तुम्हारी चाल ने तुरबत को पायेमाल किया।

तुम्हारा मैं तो हमेशा ख्याल रखता हुं,
बताओ तुमने किसी दिन मेरा ख्याल किया।

ना आती किस तरह शामत तुम्हारी अयें 'खादेम'
अदु की बज्म में क्यों उनसे अर्ज हाल किया।

दुसरी बाजूः—तुम ऐसे खुदगरज से मुहब्बत जताये कौन,
दिल लेके जो कहे के आंखें मिलाये कौन।

करता है कौन किस के बुरे हाल पर नजर,
महफिल में मुझगरीब से आंखें मिलाये कौन ।
जब मुजरिमों ही के लिये रहमत खुदा की है,
जाहेद यह फिर बता के जहंनुम में जाये कौन ।
आतककदा खलील को गुलजार हो गया,
तु जीसपे मेहरबान हो उस्को जलाये कौन ।
छोडा है जिस्के वास्ते हमने वतन "हाफीज"
सब जानते है नाम अब उस्का बतायें कौन—

Miss DULARI मिस दुलारी

N 3997 { छड देवे बीजा मेरी
३९९७ { अखियां वे रातीं सौनन देन्दया

हा रेकॉर्ड **मिस दुलारी** यांनीं गाईला असून यांतील अर्थ फार सुंदर आहे. ती पहिल्या गायनामध्यें आपल्या प्रीयास सांगते कीं, माझा हात सोड. दुसऱ्या पदांमधील मतीतार्थ असा आहे कीं, मला माझें डोळे झोंप येऊं देत नाहींत. आपण एक वेळ ऐका व त्यांतील खरी मजा लुटा.

Miss Zohra Jan & Ejaz Ali जोहरा जान व ऐजाझ अली

N 4572 { नी तूं क्यौं गै सान — सवालो जवाब
४५७२ { बद्दे कद्दे नैनून तैनून — कोरस

आतांपर्यंत या दोन प्रसिद्ध गायकांचीं दुसरी अनेक जोडगीतें काढण्यांत

आलीं आहेत, तरीपण ऑगष्ट महिन्यांत बाहेर पडणाऱ्या वरील जोडगीताला त्या सर्वांत अग्रस्थान मिळेल.

गाण्यांतील विषय साधे असून ते अत्यंत मनोहर सुरांत बसविले आहेत. साथ पियानो, व्हायोलिन, क्लॅरीउनेट, हार्मोनियम व तबला यांची असून त्यामुळें गाण्यांत रंग चांगलाच येतो.

या रेकॉर्डचा खप फारच चांगला होईल अशी आमची भावना आहे व त्याच्या प्रतींची आगाऊ मागणी करून ठेवावी, अशी आमची शिफारस आहे.

Miss Zohra Jan & Ejaz Ali जोहरा जान व इजाझ अली

N 4558	सुना दे सुना दे सुना दे कृष्णा	भजन
४५५८	सीता मोहल्ला बीच रहो मेरा मन कहना	कालिंगड

या गायकांच्या जोडीनें "सुना दे सुना दे सुना दे कृष्णा" या अजब जोडगीतांत रासमंडळाचा हुबेहुब परिणाम साधला आहे. राधाकृष्णांच्या गोष्टींत वर्णिलेल्या अनेक नाजुक संवादांतील हें गाणें आहे. सुंदर साथीनें रस भरलेलें असें हें एक विलक्षण मनोवेधक गीत आहे. रेकॉर्डच्या दुसऱ्या बाजूस श्रीरामचंद्र सावत्र आईच्या हुकुमामुळें चौदा वर्षांच्या वनवासास निघण्याच्या तयारींत असून सीता आपल्या पतीबरोबर जाण्याचा आग्रह धरून बसली आहे या रामायणांतील अत्यंत हृदयद्रावक प्रसंगावरील जोडगीत आहे.

या रेकॉर्डची कुठली बाजू जास्त चांगली आहे हें सांगणें कठीण आहे. दोन्हीही भाववर्णनाच्या व संगीताच्या बाबतींत आपापल्या परी अप्रतिम आहेत. या गायकांच्या आवाजांची सुंदर संगति, गाण्याचे सूर व उत्तम साथ यांनीं अतिशय चित्ताकर्षक बनल्यामुळें हे रेकॉर्ड पंजाबी भाषा येत नसलेल्या लोकांत सुद्धां हजारांनीं खपलेले आहेत.

आम्हांला कळविण्यास आनंद वाटतो कीं, आतां
खालील मॉडेल्स टीक बुडमध्यें मिळतिल.

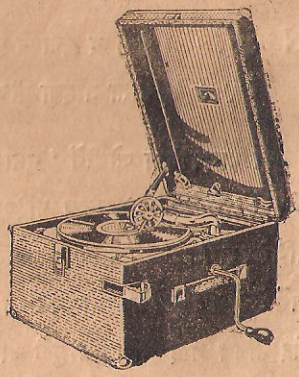

मॉडेल नं. १०२ कि. रु. १२५ — मॉडेल नं. ११४ कि. रु. १५५.

नये रेकॉर्ड
हिंदुस्तानी गायनोंके

१० इंची दोन्हो बाजुंके रेकॉर्ड.

HINDUSTANI RECORDS — हिंदुस्तानी रेकॉर्ड

Miss ANGURBALA — मिस अंगुरबाला

P 10627	पिया प्यारे ने प्रेम की कटारी	नाच के साथ
१०६२७	सैयां मानो मोरी बतियां	,, ,,

यह तो इसम बा मुसम्मा हैं आजकल अंगूरों की फसल है बाराने रहमत इलाही है. इस पुरफिजा मौसम मे जैसी फरहत तबियत को चमन के अंगूर खाने से हसिल होती है वैसे ही रूह को तकवीत **अंगुरबाला** के इस रिकार्ड सुनने से लाबदी मिलेगी. एक मरतबा नहीं बल्कीं हजार मरतबा सुनने से भी तबि-यत कर सेरी नहीं होगी. इनकी जादू भरी आवाज और दिलकश नगमा वा मुजामीन के इलावा नाच के साथ होने से लुत्फ का अन्दाजा हो गया. एक एक लफज सहॅरे सामरी का असर रखता है. जित्नी जल्दी हो सके रिकार्ड खरीदने का इन्तजाम कर लें वरना मायूसी के साथ इन्तजार करना पडेगा.

एक बाजूः—पिया प्यारे ने प्रेम की मारी कटारी...........

कोई जाओ वाको लावो सखि मिनति करत हूं तिहारीं बार २
कांधा बिहारी मै तोपे वारी तोंहे सीस मुकट है तुहार......
मेरे जोबन पे आई हैं लाखो बहार देखो मिनति करत हूं तुहार
प्यारे श्याम आओ मै हूं तुमपे निसार.........

दुसरी बाजूः—सैयां मानो मोरी बतियां......

आह मै तो हारी तोरी मिनति करत
देखो न छेडो छांडो मोरी बैयां.........

जावो सोतन के संग रहो तुम जानत हूं मै तुम्हारी खतियां
छांटो २ दो शाम मोहे देखत है सब सखियां.........

दिल छीन लिया नाज से शोखी से हंसी से
अब उनकी बला आंख मिलाती है किसी से
आइना मे क्या देखते हो अपनी अदाये
इस नाज को अन्दाज को पूछो मेरे जी सै आह मै तो हारी...

Pt. GOSWAMI NARAIN — पं. गोस्वामी नारायण

P 10628	प्रल्हाद चरित्र	भाग १	कथा भागवत
१०६२८	,, ,,	भाग २	,, ,,

जबकि हिरन्यकश्यप अनेक यत्न करने पर भी प्रल्हाद के दिल से ईश्वर का नाम न मिटा सका तो वुह अपने सेवकों से उसको गरम लोहे के खम्बे के साथ बान्धने का हुक्म देता है इस पर भी प्रल्हाद का अटल ईश्वर विश्वास नहीं छुटता और वुह भगवान से अपनी सहायता के लिये एसे मधुर और दरद भरे शबदों मे प्रार्थना करता है जिसको सुन कर कम एतकादों के शरीर भी थर्रा उठेंगे और बे तहाशा प्रल्हाद भक्त की सची भक्ती से मुतअस्सर हो कर जे के नारे गूंज उठेंगे. प्रेम से सुनकर लाभ उठाये.

एक बाजूः—जब हिरन्यकश्यप ने अपने पुत्र प्रल्हाद को हर प्रकार से दन्ड दिये पर प्रल्हाद अपने बचनों को नहीं बदलते हैं तो हिरन्यकश्यप अपने सेवक से कहता है.

दोः— बोला सेवक वृन्द से रस्सी एक मंगाय
खम्मे से प्रल्हाद को कर बान्धो जाय

हिरन्यकश्यप प्रल्हाद जी से कहता है.

ओ कुल कलंक होजा तैयार अब खडग शीश पर आती है
अब भी तू नहीं बदलता है ले मृत्यू तेरी अब आती है

बतला मुझको मै भी देखू तू ईश्वर किसको कहता है
वह कब किस कुल मे जन्मा है और किस नगरी मे रहता है

यदी उसने तुझे बचाया है तो अब क्यों देर लगाता है
इस समय बचाने को तेरे क्यों नहीं झपट कर आता है

दोः— बन्धा हुआ था खम्म से यद्यपि कोमल अंग
फिर भी कुछ प्रल्हाद का साहस हुआ न भंग
कहे पिता ने जिस समय वचन घोर रिस्याय
सहज भाव के साथ वे पडे जरा मुस्काय

दुसरी बाजूः—हिरन्यकश्यप से प्रल्हाद जी से कहता है.

मुस्का कर बोले ईश्वर के आने का कोई अर्थ नहीं
साधारण जीवों के समान वुह आता जाता नहीं कहीं

चिल्ला कर उसे बुलाऊं मै यह मुझे पसन्द न आयेगा
आवश्यक यदी वह समझेगा तो स्वयं प्रगट हो जायेगा

प्रल्हाद जी भगवान से प्रार्थना करते हैं

इस तरफ भी एक नजर बांके बिहारी देखिये
हो गई है क्या से क्या हालत हमारी देखिये

दीजे दर्शन लेके फिर भारतवर्ष मे
आपकी फुर्कत मे एक एक पल है भारी देखिये
रुख करें क्यों और जानिब आसरा है आपका
हम फक्त है आपके दर के भिक्कारी देखिये

P 10617	दरोपदी विलाप भाग १	कथा महाभारत
१०६१७	,, ,: भाग २	,, ,,
P 10621	दरोपदी विलाप भाग ३	महाभारत
१०६२१	,, ,, भाग ४	,,

MASTER RAHIT — मास्टर रहित

P 10629	लिखा अर्श पर यह बखते जली है	गजल नात्या
१०६२९	बखशी गई तक्सीरे जब नामे नबी आया	,, ,,

मोतकदाने हक की तो यह रेकॉर्ड रूहे रवां है: जित्ना ज्यादा सुन्ते जाये इश्के हकीकी से उत्ना ही सरशार होते जाते है. प्यारे नबी की बे न्याजी और शाने गफ्फारी मास्टर साहिब के ईस रेकॉर्ड से सुनकर आप दीवाना वार इश्के नबी मे मस्त होकर झूमने लग जायेंगे. इस बासिफात रिकार्ड से जरूर मुस्तफीद हों.

एक बाजू— शेरे हक दस्ते खुदा कुव्वते बाजूए नबी
हैदरे मेहरे अर्ब फातहे खबर सफदर
मजहरे शाने खुदा आशिको हमनामे खुदा
इस्मे आला है अली और लकब है हैदर
लिखा अर्श पर यह बखते जली है. खुदा की खुदाई का मौला अली है

मुनक्कश मेरे दिलपे नामे अली है. जबां पर मेरे या अली या
अली है

बरादर भी दामाद खत्मे रसुल भी. कसम है खुदा की अली है
अली है

जो करता है मुशकिल मे मुशकिल कुशाई. वुह उकदा कुशा खास
मौला अली है

रऊफे हर्जी का नजफ होवे मसकिन. इलाही यही आरजूए दिली है

बखशी गई तक्सीरें जब नामे नबी आया
इशवारी में काम आखिर मक्की मदनी आया
पुरसश मदद देने लो आ गये वुह आका
मोहताब की तुर्बत पर तैबा का गनी आया
इसलाम के गुलशन में एक ताजा बहार आई
तैबा की हवाओं का झोंका जो कभी आया
जब अर्श पे महशर मे वुह आया कफील अपना
उम्मत यह पुकार उठी खालिक का बनी आया

P 10622	जो मेरा नबी है वुह रसुलों का नबी है	गझल नात्या
१०६२२	खेती तेरी उम्मत की ता हशर बरी निकली	,, ,,

YUSUF EFFINDI — ईसुफ एफेन्डी

P 10630	तुम नालों का मेरे असर देख लेना	गझल
१०६३०	तअज्जब है मेरी आहों मे यह तासीर हो जाना	,,

इस फसीह जवान वा खुशगुलू गवैये ने इन आम पसन्द गजलों को निहायत जोश और खुश उसलूबी से अदा किया हैं. आवाज की सफाई और मजमून की खुश आराई इन पर खतम है. आलाप और तान एसी रसीली कि

सुनने वाले दान्तों मे उन्गली रखते है और महवे हैरत हो कर सकते मे रह जाते है. मजामीन इशकिया और आम फहम है. गौर से सुनिये.

एक बाजूः— तुम नालों का मेरे असर देख लेना, तडपता रहेगा जिगर
देख लेना

जफाओं को तेरी वफा जान्ते है, मिलेगा न हमसा बशर देख लेना
तसोव्वुर मे आओ न बदनाम होगे, किसी को न होगी खबर
देख लेना

खुदारा बवक्ते नजा नीमजां को, शिफा हो न हो इक नजर
देख लेना

किया तुमने दिलगीर गर मुझको रुसवा, तो अपना कदमों पे
सर देख लेना

दुसरी बाजूः—तअज्जुब है मेरी आहों में यह तासीर हो जाना
मेरे दिल से निकलना और निकल कर तीर हो जाना
नजर का चार होना यक ब यकयह भी कयामत है
न कुछ कहना न कुछ सुनना सूरते तस्वीर हो जाना
तुम अपनी खाक पा को भरदो मेरे दिल के जखमों मे
कि आता है इसे मेरे लिये अक्सीर हो जाना
किसी का खाब मे आकर कलेजे से लगा लेना
मुसलसल गेसुओं के पाओं मे जंजीर हो जाना
जबां तक खुल सकी 'अन्वर' न उनके सामने अपनी
गजब था मेरा की तफसीर हो जाना सुम्सुम बुकमु

P 10623 साबिर कलियर वाले तुमपर लाखों सलाम कसिदा
१०६२३ जमाले रूखे मुस्तफा गौसुल आजम ,,

P 10626 { अब मोसे रार क्यों मचाई — ठुमरी भैरवी
१०६२६ { कोई कहो जाये — बिंधुरा ठुमरी झांपताला

Miss MUMTAZ PALWAL — मिस मुमताज पलवल

N 6139 { शबे महताब ही गुलजार हो फूलों का बिस्तर हो — गझल
६१३९ { मै हाजिर हूं सितमगर फेर खंजर मेरी गर्दन पर — ,,

जरा आशिकों के ख्याली पुलाओ मुलाहिजा कीजिये चांदनी रात गुलजार का पुरकेफ मन्जर फूलों की सेज पर किसी नाजुक अन्दाम मह जबीन के जानू पर आपन सर हो गरजेकि दुन्या भर के सामान एशी राहत की ख्वाहिश एक तरफ और दुसरी जानिब अपनी जांबाजी का सुबूत के लिये अपना सर तक माशूका की तेग के हाजिर करना एसे दिलावेज वाक्यात को इस गजब से दिखाया है कि हजराते दिल काबू से बाहर हो जावें काबिले तहसीन रिकार्ड बना हैं.

एक बाजू— शबे महताव ही गुलजार हो फूलों का विस्तर हो
फिर उसपर यह कि जनू हो किसी का ओर मेरा सर हो
मुरादें दिल की बर आयें अगर यह दिन मुयस्सर हो
चमन हो और घटा हो मैं हो और पहलु मे दिलबर हो
न वुह आये न मौत आई शबे वादा क्यामत है
भला मेरे दिले बेताब को फिर सबर क्योंकर हो
कहां तक मैं सहूं सदमें कि अब दम ही नहीं मुझ मे
किसी की याद मे दम निकल जाये तो बेहतर हो

दुसरी बाजू—मै हाजिर हूं सितमगर फेर खंजर मेरी गर्दन पर
मेरा खूं तेरे सर पर तेरा एहसां मेरे दुशमन पर

मिला कर खाक मे मुझको बहुत पछताओगे साहब
फिरोगे ठोकरे खाते हुए तुम मेरे मदफन पर

खुदा का तूर पर दीदार मुझ को हुआ होगा
यहां तो रात दिन आंखें रहती हैं चिल्मन पर

दिले मुजतर की मेरे क्या करूं आदत नहीं जाती
मचल जाता है यह कम्बखत किसी के उठते जोबन पर

N 6111 { उम्मत है हम रसूल की बंदे खुदा के है — गझल नात्या
६१११ { हो सलाम उनपे जी है हक की मुहब्बत वाले — ,, ,,

BHAI CHELLA — भाई छैला

N 6140 { साकी न दे शराब मुझे इसका गम नहीं — गजल
६१४० { दरद बेदरद की बला जाने — गजल

माशुकों की तरफसे कोई मरे या जिये उनकी बला से. पहले तो तेगे अब्रु से आशिकों के दिलों को जखमी कर देते है तो उनकी बात तक नही पूछी जाती. इस किस्म के जजबात को **भाई छैला** ने इस खुबी से चलती हुई तरजों मे भरा है कि सुनकर कदरदान फडक उठेंगे और बिला खरीदे तबियत न मानेगी

एक बाजू— साकी न दे शराब मुझे इसका गम नहीं
बे एत्नाई शेवाए अहले करम नहीं

सिजदा की आर्जू मे जबीने न्याज है
मिलता मगर तेरा कहीं नक्शे कदम नहीं

कोई तडप रहा है कोई बेकरार है
इत्ना ख्याल तुमको खुदा की कसम नहीं

मस्ती टपक रही है तेरी बात २ पर
मौजे शराब से कोई अन्दाज कम नहीं

दुसरी बाजूः——दरद बेदरद की बला जाने   जिस पे गुजरी वुह मुबतला जाने
चैन आता नहीं किसी पहलू   दिल को क्या हो गया खुदा जाने
कोई देखा न आजतक एसा   दरदे उलफत की जो दवा जाने
ए खुदा मे उसे सुनाऊं क्या   जिस से वुह मुझको कुबतला जाने

MASTER EJAZ ALI **मास्तर इजाझ अली**

N 6141 { जो मेराज मे मुस्तफा बन के निकले   नात
६१४१ { ख्याल आया अहद को जबकि इजहारे मुहम्मद का   नात

सुबहान अल्लाह क्या फडकते हुए मुजामीन हैं हर मिसरा और एक २ लफज जजबाते हकीकी से भरा हुवा है. फिर मजा यह कि मास्टर साहिब ने एसी महवियत के आलम मे होकर गाया है कि लुत्फ और से कुछ और हो गया. बिला शक यह रिकार्ड हक प्रस्त इसहाब की खुशी को दोबाला करने मे कामयाब साबित होगा. सुरीली वा शीरीं आवाज वा साफ लबोलहजा ने रिकार्ड मौसूफ को अजबस दिलकश वा मुअस्सर बना दिया है. लिहाजा कामिल यकीन है कि रिकार्ड जरूर पसन्द खातिर खासो आम होगा.

एक बाजूः—जो मेराज मे मुस्तफा बन के निकले अजब शान से दिलरुबा बन के निकले

कहे कोई क्या आप क्या बन के निकले हकीकत मे शाने खुदा बन के निकले

जमीं से सरे अर्श तक थी यह शोहरत मुहम्मद शफीउलवरा बन के निकले

मलक गुल मचाते थे सल्ले अला का जो घर से शहे दोसरा बन के निकले

बिछाते थे आंखों को जिबरील अपनी दो आलम के जब रहनुमा बन के निकले

दुसरी बाजू:—ख्याल आया अहद को जबकि इजहारे मुहम्मद का
सिमट कर बन गया इक नूर नुक्ता नूर अहमद का
खुदा पूछे वसीला किसका लाये हो तो कहूंगा
मुहम्मद का मुहम्मद का मुहम्मद का मुहम्मद का
जहे वुह आंख जो सरगरमे शौके दीद हजरत है
जहे वुह दिल की जिसमे सोज हो इश्के मुहम्मद का
अहद कहते है गर उसको तो ईसको कहते है अहमद
फक्त परदा है इसमे और उसमे मीम अहमद का
मुकद्दर औज पर आ जाये यारब इलतजा यह है
मेरा सर और संगे अस्तां हो शाहे अहमद का.....

N 5615 सजन घर लागे या — जिवनपुरी त्रिवट
५६१५ हरी भजन को मानरे — भैरवी रुपक

हा रेकॉर्ड प्रो. विनायकराव पटवर्धनने गाईलेला आहे तो इतका शास्त्रशुद्ध आहे की, रेकॉर्ड संग्रही ठेवण्याजोगा आहे. आतांच ऐका.

N 6101 क्यों जुल्फ हिली पूछते हैं बादे सबा से — गजल
६१०१ जल्वाये दीदारे जाना मे भी कितना जोश था — गजल

N 6114 जिगर का खून भी है इफ्तखार के काबिल — गझल
६११४ पिलाये चला जा पिलाये चला जा — ,,

FAKHRE ALAM QUAWAL फकरे आलम कव्वाल

N 6142 कहते हैं लबे नाजुक उनके अब बर्क गिरेगी कहीं न कहीं गजल
६१४२ पहले ही जुदाई से मन्जूर है मर जाना ,,

फखरे आलम साहेब के रिकार्डों पर वाक्यों जित्ना फखर किया जाये थोडा है. सुरीली वा रसीली आवाज पुर बहार और दिलफरेब तरजों ने नफसे मजमून की तासीर को बे इंतहा बढा दिया है हर दो जानिब दोनो गजलें निहायत आला पैमाने मे भरी हैं आशिक मिजाज शायकीन ईन का रिकार्ड सुनने से पहले अपने दिलों से होशियार रहे.

एक बाजू:—कहते हैं लबे नाजुक उनके अब बर्क गिरेगी कहीं न कहीं
यह जुन्बशे अबू कहती है तल्वार चलेगी कहीं न कहीं
वुह मुझसे खिचे हैं खिच जाये क्यों उनको मनाऊं फिक्र करूं
माशूक जहां मे लाखों है तकदीर लडेगी कहीं न कहीं
वुह मेरी फुंगा पर हंसते है अहमद यह नहीं मालूम उन्हें
मेरी आह नहीं चिन्गारी है अब आग लगेगी कहीं न कहीं

दुसरी बाजू—पहले ही जुदाई से मन्जूर है मर जाना. जब जान निकल जाये
तुम शौक से घर जाना
हज्हारे तमन्ना पर तुम दिलमे न ठर जाना. इकरार से दिल लेना
दिल लेके मुकर जाना
पहली है शबे वादा कोसो न हमे इतना दिल देके अभी हमने
सीखा नहीं मर जाना
यूं वादा किया उसने यूं हंसके कहां उसने हम आके जिला लेंगे
तुम शाम से मर जाना

N 6107 तेरे रौजेपर ख्वाजा मैं घुम घुम के — कसिदा
६१०७ कमलीवाले ने दिल चुराये लीनो रे — नात
N 6115 नामे अहमद के नये राज ने दिल छिन लिया — नात ।
६११५ अल्ला—अल्ला—अल्लाहु — जिक्र हक ।

MASTER FAQIRUDDIN मास्तर फकीरूद्दीन

N 6143 छुपे हो आज ए मुरली मनोहर जाके किस बन मे भजन
६१४३ मिट रही कौम तेरी बान्सरी वाले आ जा

इस मौका जन्म अष्टमी पर जबकि तमाम हिन्दोस्तान के अन्दर और बाहर अहले हनूद के दिलों मे भगवान कृष्ण के जन्म दिन पर तरह तरह की खुशियां मनाई जाती है और उस महान शक्ति की महाता की याद दिलों में ताजा होती है मास्टर साहिब ने भी यह दो अछूते भजन भर कर भक्तों के लिये नादिर तोहफा हाजिर कर दिया ह आशा हे कि इसको सुनकर दिलों में

N 5314 हिन्दना हिन्दी तमे वीर रमणी
५३१४ आवो आवो श्याम सुंदर देवा होथल

मि. कासमने गाइलेला हा रेकॉर्ड भारतवासियांनीं एक वेळ जरूर ऐकावा.

भक्ति भाव का समुन्दर उमड आयेगा. कोम की दुरदशा देखकर भगवान से डसेक बचाने के लिये जो प्रार्थना की गई है उसको सुनकर आप की आखों से आंसु बह निकलेंगे. एसे ही प्रेम से सुनिये जैसे प्रेम से यह रेकार्ड भरा गया है.

एक बाजूः— छुपे हो आज ए मुरली मनोहर जाके किस बन में
कि मुरझाने चमन बेताब है भारत के गुलशन में
व्रज सुन्सान है ए शाम गोकुल में अन्धेरा है
करेंगी रह के अब क्या पुतलियां आंखों के रौजन में
मुकट धारी दिखा दो फिर नजारे रास लीला के
खडी है गोपियां बाहर न बैठो शाम चिल्मन में

मधुर स्वर फिर सुना दो बन्सरी के तट पे जमना के
श्री राधा को लेकर आओ डाले हाथ गर्दन में
सजीले शाम की जो छब कभी मथुरा में देखी थी
कयामत तक वुही मन्जर रहेगा चश्मे रौशन में

दूसरी बाजू:—मिट रही कौम बन्सरी वाले आजा
अपने भारत को उजडने से बचा ले आजा
छा रही दुखकी घटा काली तेरे भारत पर
अपने भक्तों को मुसीबत से छुडा ले आजा
राह तकती है तेरी गउए खडी मकतल में
सुनके फरयाद जरा कृष्ण गवाले आजा
जुल्म के सेकडो बादल है घिरे भारत पर
अपनी उन्गली से उन्हें भी तो उठा ले आजा
लाज जाती है तेरे देश में अबलाओं की
द्रौपदी की तरह अब चीर बढाले आजा

N 6102	इस प्रीत की कुटिया मे स्वामि अब जिया मोरा	भजन
६१०२	न तू जोगी बन न बिरोगी बन न तिलक लगा के तू	भजन
N 6116	हर हक सिमत जिकरे खुदा हो रहा है	नात
६११६	बनाया दम कदम अल्लाह ने एसा मुहम्मद का	नात
N 6132	सितम ईजाद हो कोई सितम ईजाद हो जाये	गझल
६१३२	वुह मैखाने का दुशमन आतिशे तर से	,,

KALOO QUAWAL — कालु कव्वाल

N 6144	कृपा की राखो नजरिया ख्वाजा	कसीदा ठेठ
६१४४	वासे नेहां लगाके एरी सखी	बागेश्री कव्वाली

वाह वाह एसे मुअस्सर पैराये में कसीदा गाया है कि बायदो शायद. समझन को वजद में लाना तो **कालु कव्वाल** के रिकार्ड का एक अदना कृशमा हैं. नजरने खुदा ने आपकी आवाज मे कौनसी एसी तासीर पैदा की है जिसके कान में पडते ही सरूर आने लगता है बगैर सुने ले ले ती भी अच्छा है. मजमुन हवाला कलम है.

एक बाजू:—कृपा की राखो नजरिया ख्वाजा जी तुमपे बल २ जायें बिरहा अगिन से जिया जरे दिन रैना नहीं लेते खबरया.....

हिन्द के राजा तुम मै दुख्यारन अपनी बुलालो दवरया.....
कल नहीं आवे मोहे जिया नहीं माने सूनी पडी है सेजारया.....

दुसरी बाजू:—वासे नेहां लगाके एरी सखि मोरा चैन गया मोरी नींद गई
मोरी दुख की कारो सुनाऊं पिया क्या हिंद मे जान गवाऊं पिया

तुम जाये बसो यसरब नगरी मोरा चैन गया मोरी नींदग
तन मन मे लगी बिरहा की अगिन मोरी नाहीं खबर तोहे मन मोहन
यह कैसी मुसिबत आन पडी मोरा चैन गया मोरी नींद गई

कहे नूर मोरा सुपने मै पिया न छीन लियो छब अपनी दिखा
जब आंख खुली सुध बुध न रही मोरा चैन गया मोरी नींद गई

N 6108 हक के प्यारे उम्मतवाले तुमपे नात
६१०८ रूये मनौव्वर देखा दो मुहम्मद प्यारे ,,

N 6117	दिल शोख हसीनों से लगाना नहीं अच्छा	गझल
६११७	मेरी आंख क्या आप से लड गइ है	,,
N 6133	हम मजारे मुहम्मद पे मर जायेंगे	गजल नात्या
६१३३	अल्लाह हू अल्लाह हू अल्लाह हू अल्लाह हू	जिकरे हक

K. C. DAY (Blind Singer) के. सी. डे (अन्ध गवई)

N 6145	अबदुमखलूक है हम खालीको मावूद है तू	हमद
६१४५	बशर या नबी हो मगर ऐसी खू है	नात

N 5619	**गांधा गुरु जगताचा हा**	**बागेश्री त्रिताल**
५६१९	**अपने दासी बनी-भैरवी धुमाळी चलती दुनिया**	

हा रेकॉर्ड तुम्ही अजून ऐकला नसेल तर आजच ऐका हा **ताराजानने** गाईलेला आहे.

के. सी. डे का नाम ही कुछ अपनी तासिर रखता है. दिल इनके रेकार्ड को छोड कर किसी तरफ रजूह नहीं होता. किस कदर दरद अंगेज और सुर में घुटी हुइ आवाज है दिलावेज गले की फिरत इनको वाकई एक जुदादाद अत्या है. इन दोनो हक्कानी चीजों का एक एक लफज इसमे आजम का असर रखता है. रेकार्ड सुनिये और उस पाक परवरिदगार की सिफात आला से फैजयाब होजिये.

एक बाजूः—अबदुमखलूक हैं हम खालिको मावूद है तू
मरजाये अहले जहां मजिले मकसूद है तू
जल्वा तेरा ही दिले बरहमनो संग मे है
क्यों न फिर कोई कहे साजिदो मसजूद है तू

चाहिये दिदाये दिल तेरे नजारे के लिये
कोर बातन है जो कहता है कि मफक़ूद है तू
कया धरा है हरमो दैर मे क्यों जाये कोई
जर्रे २ से तेरा जल्वा है मौजूद है तू

दुसरी बाजूः—बशर या नबी हो मगर एसी खू है, कहा हक ने तुमसे
जो मै हूं सो तू है
यह सूरत यह हुस्नो जमाल अल्लाह २ कि मुशताक
दीदार हर खूबरू है
असर मेरी आहों मे दे यारा इन्ना नशी आके खुद पुछे
क्या आरजू है
लगाई हैं लौ नजह मे मुस्तफा से न छेडो किसे फ़ुरसते गुफतगू है
न हो अफवे इस्यां से मायूस साकी कि फरमाने गफार
लातकनातू है

Pandit Totaram **पंडीत तोताराम**

N 6146 { न शंख फुंकेंगें न घन्टी बजायेंगे — भजन
६१४६ { सन्देशा उधो मेरा पाती यह पहुंचा देना

पण्डित जी भी उक ही गुनी है. आपकी मधुर वानी सुरताल से वाकफियत और आला रियाज ही का यह असर है कि आज शायकीन को अपनी काबलियत का काबिले दाद नमुना पेश कर सके है गो इनके लिये रेकार्ड भरने का यह पहला मौका है मगर इस में वुह अमृत भर दिया है कि जिसको बार बार चखे बगैर दिल नहीं मान्ता. पंडित जी के इस आला नमुने को सुनकर कदरदान जरूर महजूज होंगे.

एक बाजूः—न शन्ख ही फुंकेंगें न घन्टी बजायेंगे
श्री राधेकृष्ण रटते रटते जायेंगे

न फुल न चंदन न हम भोग लागायेंग
यह जाहरी प्रीती न हम जग को दखायेंग..........

न पुरान कथा न खाल के पोथी करगें हम चरचा
न झांझ बजा कर आवाहन की करगे हम पुजा

न मन मन्दीर में बैठ करेंगे मुक्ति की आशा
इस मन के मंदिर अन्दर तीर्थ नया बनायेंगे.........

मन काला हो तो गेरवे बस्त्र रंगना क्या
जब मन में प्रेम की आग न हो घूनी रमाना क्या

जब नकश न दिलपर कृष्ण नाम हो तिलक लगाना क्या
आसी न एसे रंग रंगले रुप बनावेंगे.........

N 5628 / ५६२८	गांधीजीका नाम डुबाते	भाग १
	,, ,, ,,	भाग २

मुकुंद आणि पार्टीने गाईलेला हा रेकॉर्ड आपणांस गुदगुल्या केल्या-वांचून खास राहणार नाहीं.

दुसरी बाजूः--सन्देसा उधो मेरा पाती यह पहुंचा देना
प्याम हाथ से नामा कृष्ण को जा देना

न चैन दिन को हमे न शब को नींद आती है
सीमाब घर के तली पर जगा दिखा देना

दवा न रोग की मेरी बिके दुकानों मे
दरश की औषधी शामा पिला शफा देना

गली गली मे सखि फिर रही हूं दिवानी
दरश दिवानी का दरशन से दिल बहला देना

भुलाया दिल से हमें है कि खुद उछल बठे
कभी तो ख्वाब मे शामा छबि दिखा देना......

Miss DULARI — मिस दुलारी

P 10620 / १०६२०	महबूब खुदाये लम यजली सुल्तानुलहिन्द गरीब नवाज कसीदा	
	नजर आज रूए हबीब आ गया है	नात
P 10624 / १०६२४	साकी तेरी अंगूरी शीशे मे भरी क्यों है	गझल
	छुटे असीर तो बदला हुआ जमाना था	गझल

PEARU QUAWAL — प्यारु कव्वाल

P 10615 / १०६१५	अजब हुस्ने महंमद मुस्तफा मालुम होता है	नात
	दिल है मुस्ताक जुदा आंख तलबगार जुंदा	गझल

N 5611 / ५६११	अब भी क्या बक्षीस	गझल
	बहार आई उधर कलियां	,,

हा रेकॉर्ड **अशरफखानने** गाईलेला आहे. हा आजच ऐका.

P 10618 / १०६१८	इल्ला हू इल्ला हू इल्ला हू इल्ला हू भाग १	जिकरे हक
	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, भाग २	,, ,,
P 10625 / १०६२५	जमीं से कदम अरश पर ले गया	गझल कवाली
	या खुदा दरदे मुहब्बत मे असर हे कि नहीं	,, ,,

Miss KAMLA (JHARIA) — मिस कमला (झरिया)

N 6124 / ६१२४	देखी एसी कामनी	ठुमरी धानी
	झुलन्या जुल्म करे	दादरा

MUSHTARI BAI — मुशतरी बाई

N 6098	क्यों न हों जहां मे अयां एबो हुनर अलग	गझल
६०९८	घुंघट उस रूख से गर जुदा हो जाये	गझल
N 6125	मारेंगे नैना बान बचे रहना	ठुमरी
६१२५	कहा मानले पपीहरा न ले पिया का नाम	ठुमरी

MISS NIAJ BEGUM — मिस न्याज बेगम

N 6126	हकीकत मे देखा जिधर तू ही तू है	गझल
६१२६	जला ले कबतक जलायेगा तू सता ले कबतक	,,

Miss Rajmani Bai — मिस राजमनी बाई

N 6112	जमना किनारे पडा हिन्डोल	कजरी
६११२	जन्यां समझ के खेलो कजरिया	कजरी
N 6099	तुम हम से जुदा हम तुम से जुदा तुम और कही हम और कही	गझल
६०९९	नाजो अदा से शरमो हयासे	दादरा
N 6127	सिया संग झूले बगिया मे राम ललना	कजरी
६१२७	जादू कर बेहल्मायो राम	कजरी

Miss USHARANI — मिस उषाराणी

N 6120	मोसे बोलो न बोलो तुहार मर्जी	नाचके साथ
६१२०	छोटे देवरा मै तोरे संग ना जाऊंगी	,, ,,
N 6128	पार करो मोरी नैयां	दादरा नाट्य
६१२८	मेराज की शब आई यह सदा तू और नहीं	गझल नाट्य

Miss JOHRA JAN — मिस जोहरा जान

N 6100	बिन देखे तोरे चैन जरा नहीं आवे	दादरा
६१००	जावो जावो सइयां मै तो नाहीं बोलूं तोसे	,,
N 6113	मै तेरे कुरबां यह क्या रशके मसीहा कर दिया	गझल
६११३	मस्त बेखह बनूं रुसवा बनूं दीवाना बनूं	,,
N 6129	आंख दिलपर डाल कर महवे तमाशा कर दिया	गझल
६१२९	न हम रोते है फुरकत मे न हम फरयाद करते है	,,

ALI HUSSAIN NABINA — अली हुसेन नाबीना

N 6130	काहे सुध बिसराई मोर यसरबवाले बाल्मा	नात
६१३०	कुछ भी गर चश्मे मुहम्मद का इशारा हो जाये	नात

N 5614	तुम झुटे दोस	तिलग ठुमरी
५६१४	दिनके दयाल	भजन

मिस मेहबुबजाननें ही दोन पदें किती सुंदर व सफाईनें गाईलीं आहेत ती आपण हा रेकॉर्ड ऐकाल तेव्हांच समजेल.

Prof. BHAILAL — प्रो. भाईलाल

N 6131	गुनन के सागर	ख्याल अडाना
	बोली ठोली काहे करत री नार	मालकौंस

Mr. Sajjad Sarvar Niazi B. A. Amateur
मिस्टर सज्जाद सरवर नियाजी बी. ए. अमेच्युर

N 6134	वुह नबियों में रहमत लकब पाने वाला	नात
६१३४	वुह शमह उजाला जिस ने किया चालीस बरस तक गारों में	,,

Miss BUGGAN JAN — मिस बुगग्न जान

N 6097	अंगिया मोरी बूटे दार	दादरा
६०९७	अब नाहि बचत बचाये जोबनवा	ठुमरी भैरवी
N 6110	वक्त आखिर है यह रौनक नहीं फिर आने की	गझल
६११०	किसी कों देके दिल कोई नवासंजे फुगां क्यों हो	गझल

Master Labhu — मास्तर लब्भू

N 6118	सुना है उनको मंजूर नजर तेग आजमाई है	गजल
६११८	इश की चोट का कुछ दिल पे असर हो तो सही	,,

MASTER VILAITU — मास्टर विलायतु

N 6119	भारत का मान गंवा बैठे	कौमी गाना
६११९	कर्म्म देश है धर्म्म देश है	,, ,,

Miss INDUBALA — मिस इंदुबाला

P 10619	तन मन वारूं बांके सांवरया	नाचके साथ
१०६१९	सखी मोरे आजहु न आये सांवलया	,, ,,

INSTRUMENTAL RECORDS — वाजींत्र रेकॉर्ड

Gramophone Concert Party — ग्रामोफोन कन्सर्ट पार्टी

N 6147	पियानो वायलन कलेरयोनट वा तबला	गत–यमन
६१४७	,, ,, ,, ,,	राग भूपाली तीनताल

अगस्त का महिना है. नन्ही नन्ही फुहार पड रही हो. दुन्याभी झंझटों से फरागत पाकर इन्सान अपने आपको मसरूर करना चाहो तो यह रेकार्ड जरूर खरीद करे. प्यानो के दिलकश नोट. वायलन की पुरसर झंकार. कलैरियोनेट के दिलफरेब नगमे इन्दर के अखाडे को भी मात कर रहे है. मुलाहिजा हो.

Master Manohar Barve — **मास्टर मनोहर बर्वे**

N 6109 { मिउजिकल सवमेरीन
६१०९ { काष्ठतरङ्ग — बेहाग

ARABIC RECORD — आरबी रेकॉर्ड

Qari Mohd. Abdus Sami — **कारी मुहम्मद अबदुस्समी**

N 6148 { अजान मक्का — अजान
६१४८ { अना काफा ओ अलफ तिहा

अहले इसलाम के लिये यह एक नाहिर मौका है कि वुह ईस बे बहा तोहफे को लेकर बतौर तबरूक रखें और ईस से मुस्तफाद हो.

LAUGHING RECORD — हन्सी का रेकॉर्ड

Charles Premrose & Co. — **चार्लस प्रेमरोज अन्ड कंपनी**

N 4222 { हंसी — कार्नेट के साथ
४२२२ { ,, — कन्सेर्टिना के साथ

यह रकॉर्ड भी एक अजीब व गरीब रेकार्ड है एक गैर साजिन्दा शखस साज बजाने की नाकाम कोशिश कर रहा है उसकी हरकत पर हाजरीन कहकह लग रहे जिससे सारी महफिल दिवारे कहकह बन गइ है। यह रेकार्ड फिक्रमंद और बिमार अदमीयों क लिये दारूये शिफा की काम देगा। वह जिस्के दिल किसी बात में नहीं लगता ईस रेकार्ड को बजा कर जरूर सुनलें.

Grmophone Dramatic Party

ग्रामोफोन ड्राम्याटिक पार्टी

शीरीं फरहाद	ड्रामा	एन ४०१३ ते ४०१४	कि रु. ५–८–०
लैला मजनुन	,,	एन ६०७३,६०७४ व ६०७५	,, ८–४–०
वीर अभिमन्यु	,,	एन ६०२८ ते ६०३९	,, ३३–०–०
विल्व मंगल उर्फ सूरदास	,,	एन ६०८१ ते ६०८६	,, १६–८–०

१२ इंची कलकत्ता के मशहूर गवैयोंका जमघट रेकॉर्ड

HT 1

गवैयों के जमघट–पहला दृश्य.

या इलाही मिट न जाये दर्दे दिल–गजल	मिस दुलारी
तेरा हुस्न बेशक बेडी चीज है–गजल	प्यारू कव्वाल
हैरते जल्वागरी मोहरे लब–गजल	मिस जोहरा जान

गवैयों के जमघट–द्वितीय दृश्य.

करम मोरे जागे–ठुमरी	मिस इन्दुबाला
सुन्दर सुरजन–ठुमरी	प्रो. जमिरउद्दीन खान
सय्यां तोरे झगडे–भैरवी	मिस अंगूर बाला

MARATHI RECORDS मराठी रेकॉर्ड

Kumari Shama Majgaonkar कु. शामा मजगांवकर

N 5051	नाथ करीत मज घाय- मालकौंस	भा. वि- बेरेरकरकृत	
५०५१	बन्सीवाला सखे झुलवी–पिलु मिश्र	,,	,, ,,

Prof. NARAYANRAO VYAS प्रो. नारायणराव व्यास

N 5049	उगिच कां कान्ता	सिंध कॉफी
५०४९	प्रणत पाल तूं असशी	ललत

PENDHARKER पेंढारकर

Lalitkaladarsh Sangit Mandali ललितकलादर्श सं. मं.

N 5036	पथ दिसतां परि स्वतां-आनंद भैरवी–त्रिवट, सोन्याचा कळस		
५०३६	घरिं असावा दावा निशिदिनिंचा–जयंत मल्हार	,,	,,
N 5050	विनाश कां सहगामीच	पहाडी मांड गझल–पुण्यप्रभाव	
५०५०	मन पोळे सदा हें	कवाली–राक्षसी महत्वाकांक्षा	

GOVINDRAO MASHELKAR गोविंदराव माशेलकर

Lalitkaladarsh Sangit Mandali ललितकलादर्श सं. मं.

N 5037	मानिलें पित्याहुनि मी ।	मांड केरवा–वधूपरीक्षा	
५०३७	कितिहि जरी समजावि	गझल पिलु–केरवा	,,

HINDUSTANI RECORDS हिंदुस्तानी रेकॉर्ड

Bai Gangoobai of Hubli बाई गंगुबाई, (हुबळी)

N	5645	कित गयो बावरी बना	मांड केरवा
	५६४५	श्याम सुंदर तोरी	खमाज ठुमरी
N	5656	मेरो मन हरलीनो, शामसुंदर	मालकौंस–त्रिताल
	५६५६	छांड मोरी बालम बैंय्या मरोरे	बागेश्री एक्का

Miss Mehbub Jan of Sholapur. मेहबुबजान, (सोलापूर)

N	5646	भंवदा यारदा	वसंत ललत जलद
	५६४६	ताना नादिर दिर दिम	तराणा
N	5650	तरस रही आँखिया	भैरवी
	५६५०	जल्व हे हुस्नो हकीकत	गझल
N	5657	तुम जो चाहो तो मेरे	गजल दुर्गा
	५६५७	अब ना सहुं तोरी बात	ठुंबरी

Prof. Narayanrao Vyas प्रो. नारायणराव व्यास

N	5647	सखी मोरी रुमझुम	दुर्गा
	५६४७	नीर भरन कैसे जाउं	तिलक कामोद

N 5658 / ५६५८
- येरी हुं तो आस न गैली — श्री राग
- तूं घटका पट खोल — कानडा-भजन

Master Bhagwandas — मास्टर भगवानदास

N 5659 / ५६५९
- झिनी झिनी बीनी चदरियां — भजन सोरठ
- ए संतति ए संपति — ,,

Chimanlal — चिमनलाल

N 5660 / ५६६०
- मोरे पिया जगे सारी रात — जोगीया
- जिने आपकोजोया नहीं — गझल

G. N. Joshi. B. A. (Amateur) — जी. एन्. जोशी. बी. ए.

N 5651 / ५६५१
- तुम सब मिलकर मंगल गावो — खंबावति-त्रिवट
- झुम झुम झुम झुम पायल बाजे — बिहाग-त्रिवट

Prof. VINAYAKRAO PATWARDHAN — प्रो. विनायकराव पटवर्धन

N 5648 / ५६४८
- देखो सखी आज — मल्हार झपताल
- तराणा — हिंडोल

N 5652 / ५६५२
- गरजत आये — सुरदासी मल्हार–विलंबित त्रिताल
- सुमिर हो नामको — जीवनपुरी–झपताल

ASHRAF KHAN — अशरफखान

N 5653	कित गये बांके बिहारी	गझल–मुनशी अब्बास अली कृत
५६५३	देखी बुतोमें जल्कगरी	,, ,, ,, ,,

Master Mohan of Una — मास्टर मोहन (उना)

N 5649	हुं दिलसे फिदा–भाग १	गझल
५६४९	,, ,, ,,–भाग २	,,
N 5654	भारतमें एक वीरनें डंका बजादिया	गझल स्वकृत
५६५४	गांधी तेनो ए देशको–	,, ,,

VENKATRAO RAMDURGKAR — वेंकटराव रामदुर्गकर

N 56[illegible]	मोरो राजा किडकिय खोलो	ठुमरी केरवा
[illegible]६५५	लंगर बतिया	भैरवी दिपचंदी

INSTRUMENTAL RECORDS — वाजींत्र रेकॉर्ड

MASTER SOMAN — मास्टर सोमण

N 5909	दिलरुबा–गत–परज	(पग चलत कान्हा)
५९०९	,, –गत–अडाणा	(मुदरी मोरी का)